साँची के स्तूप का ऐतिहासिक अध्ययन – स्थापत्य कला के विशेष संदर्भ में

Archana singh[1] & Dr. Ramratan Sahu[2] & Dr. Anju Tiwari[3]
1 M.Phil. Research Scholar 2, 3 Associate Professer
1,2,3 Dept. of History, Dr, C.V. Raman university, Bilaspur, India

सारांश :– मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में स्थित साँची का स्तूप अपने अप्रतिम बौद्ध स्मारकों तथा स्थापत्य कला के कारण सम्पूर्ण विश्व में बौद्ध धर्म का पर्याय बन चुका है। बौद्ध अनुयाइयों से मिलने वाले दान तथा राजकीय संरक्षण के कारण यह स्थल 3 री शताब्दी से 12 वी शताब्दी तक फला फूला किंतु भारत में बौद्ध धर्म के पतन के साथ ही साँची 14 वी शताब्दी से विरान हो गया था। साँची के स्तूपों को खोजने का श्रेय जनरल टेलर को जाता है, किंतु इसके जीर्णोद्वार का वास्तविक श्रेय सर जॉन मार्शल को जाता है। इस शोध पत्र में साँची में स्थित विभिन्न स्तूपों एवं बौद्ध कालीन स्थापत्य कला का विवरण दिया गया है।

शब्दकुंजी :– स्थापत्य कला, बौद्ध धर्म, साँची स्तूप, सर जान मार्शल, मौर्य साम्राज्य, जातक कथाएं

प्रस्तावना :– साँची एक ऐसा स्थल है जो अपने अप्रतिम बौद्व स्मारकों तथा स्थापत्य कला के कारण सम्पूर्ण विश्व में बौद्व धर्म का पर्याय बन चुका है। यह स्थल मध्यप्रदेश के राजधानी भोपाल से 45 किलोमीटर पूर्वोत्तर में रायसेन जिला मेंस्थित है यह स्थान बुद्ध की किसी जीवन घटना से सम्बंधित नहीं है और न हि कभी यह संघ की घटना या सम्मलेन का केंद्र स्थल था। चीनी यात्री व्हेनसान्ग ने अपने भारत यात्रा वृत्रांत में अन्य बौद्ध स्थल का विस्तृत विवरण दिया परन्तु साँची के विषय में मौन है।

मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने के पश्चात उन्होंने बुद्ध के अवशेषों पर कई स्थानों पर स्तूपों का निर्माण प्रारंभ करवाया लेकिन साँची का स्तूप वर्तमान में भारत में तमाम स्तूपों में से काफी अच्छी स्थिति में है बौद्ध अनुयाइयों से मिलने वाले दान तथा राजकीय संरक्षण प्राप्त होने के कारण ये स्थल3 री शताब्दी से 12 शताब्दी तक फला फूला।

साँची स्तूप का परिचय :– साँची की पहरी पर स्थित सभी स्तूपों में स्तूप क्र–1 सबसे बड़ा है जिसका व्यास 36–68 मी. और वेदिका तथा छात्रावली छोड़कर इसकी ऊंचाई 16–46 मी. है।इस स्तूप में दोहरे सोपान मार्ग से युक्त मेधी या मेढ़ी स्तूप के चारों ओर भू–वेदिका, प्रस्तर निर्मित प्रदक्षिणा पथ, स्तूपकार अस्थिमंजुषा, हर्मिका, वेदिका से परिवृत छत्रावाली तथा चरों दिशाओं में चार तोरण द्वार का प्रावधान है ।

इस महान स्तूप का निर्माण अशोक ने करवाया था । परन्तु वर्तमान परियोजना शुंग कालीन है । अशोक कालीन ईंटों के स्तूप पर प्रस्तर खंडो का आवरण चढ़ाकर स्तूप का आकार बढ़ा दिया गया था ।

अलंकरणों से परिपूर्ण इन चार तोरण द्वारों का निमार्ण ईशा पूर्व पहली शताब्दी में शातवाहन राजाओं के शासन काल में हुआ इसकी पुष्टि दक्षिणी द्वार के शीर्षक सिर दल पर

अंकित शिलालेख से होती है तथा इसका निर्माता विदिशा के दंतकार श्रेष्ठि थे। जिसकी पुष्टि उस अभिलेख से होती है जो दक्षिणी तोरण के बाएँ स्तम्भ पर उत्कीर्ण है।

हीनयान प्रभाव के कारण जातक कथाओं में वर्णित द्रश्यों में बुद्व को सांकेतिक रूप में दिखाया गया है जैसे कि उनका अश्व कंथक जिस पर उन्होने अपने पिता का घर छोड़ा था। उनके चरणों के निशान और बोधीवृक्ष जिसके नीचे उन्हे दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ था। पूर्वी प्रवेश द्वार बुद्व के जीवन के उन द्रश्यों के बारे में बताता है जब युवा गौतम ज्ञान की तलाश में अपने पिता का महल छोड़ देते है। बौद्व पंथ में यह घटना महाभिनिष्क्रमण के रूप में जानी जाती है।

बौद्व धर्म के जन्म और संरक्षण की कहानी दक्षिणी प्रवेश द्वार पर दर्शायी गई है। दूसरी ओर उत्तरी प्रवेश द्वार जातक कथाओं में वर्णित भगवान बुद्व के चमत्कारों पर आधारित है।

सॉची में स्तूप क्र.1 और इसके उत्तर–पूर्व दिशा में स्तूप क्र. 3 है तथा यहां से लगभग 200 मीटर की दूरी में पश्चिम दिशा में स्तूप क्रं 2 है। इसके अलावा परिसर में अन्य छोटे–छोटे स्तूप, मठ, मंदिर और खंडित स्तम्भों के अवशेष भी स्मारक के रूप में विद्यमान है। उनमें से दक्षिण द्वार के समीप स्तूप क्रमांक 1 के पास अशोक द्वारा स्थापित करवाया गया एक शिला स्तम्भ संख्या 10 सबसे उत्कृष्ट है जिसका सिंह–शीर्ष अब साँची के स्थल संग्रहालय में संरक्षित है। एक और अद्वितीय स्तम्भ संख्या 35 वज्रपाणि स्तम्भ के रूप में खड़ा है जिसमें मूर्ति के प्रभामण्डल की परिधि के चारो ओर समान अन्तर पर 12 छेदों वाला धातु का उज्जवल प्रभामण्डल लगा था।

साँची के कई पुरातन स्मारकों में महत्वपूर्ण चैत्य सभागार मंदिर संख्या 40 है जो कि 3 री शताब्दी ईशा पूर्व से 2 री शताब्दी ईशा पूर्व का है। एक और मंदिर संख्या 17 जो आकार में साधारण है जिसकी समतल छत वर्ग गर्भगृह और खम्भेदार बरामदा है। यह गुप्त कालीन मंदिरो का सबसे प्रारंभिक उदाहरण माना जाता है। इसके अलावा साँची ने अपनी पहाड़ी की चोटियों पर कई मठो के अवशेषों को सहेज कर रखा है। हर मठ में एक मुख्य आँगन है जिसके चारो ओर कक्ष है। बहरहाल मठ संख्या 51 ज्ञात सभी अवशेषों के बीच सबसे प्रभावशाली संरचना है।

साँची स्तूप का इतिहास –

मौर्य कालः– साँची का महान स्तूप भारत के सबसे प्राचीन संचानाओं में से एक है और असल में ३ री शताब्दी में सम्राट अशोक में बनवाया था। इसका नाभिक अर्धगोला ईंट संरचना में बौद्व के अवषेशों के अधर पर बनाया गया है, इसे छत्र का ताज भी पहनाया गया है वंहा रत्नों से आभुषित एक स्तंभ भी स्थापित किया गया है । यह स्तम्भ अशोक का ही शिलालेख था और गुप्ता वंश के समय संख लिपि से बनाने वाले आभूषण भी इसमें शामिल है।

शुंग कालः– वास्तविक ईंटो के स्तूप को शुंग के समय में पथरों से ढका गया था एसा माना गया था की स्तूप को दूसरी शताब्दी में कंही–कंही पर तोड़ा–फोड़ा गया था । शुंग सामान्य के विस्तार को लेकर एसा माना जाता है कि शुंग वंश के पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य साम्राज्य आर्मी जनरल बनकर उसे अपना लिया था।एसा कहा जाता है की पुष्यमित्र ने ही वास्तविक स्तूप को छति पहुचाई थी और तोड़ फोड़ की थी और उसके बेटे अग्निमित्र ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था।

सातवाहन कालः– तोरण द्वार और कटघरों का निर्माण किया गया और उन्हें रंग भी दिया गया और बाद में कहा जाता है की सातवाहन ने ही इसे कमीशन किया था। कहा जाता है कि द्वार पर बनाई गई कला कृतियाँ और द्वारों के आकार को सातवाहन राजा सातकरणी ने ही निर्धारित किया था। द्वार और कटघरों का निर्माण 182 ई.पू. से 160 ईसा पूर्व से भी पहले बनाये गये थे। बाद में इन्हें पत्थरों से विभूषित किया गया था।ऐसा प्रतीत होता है की बोद्ध स्तूप को कोई सही संरक्षण नहीं है। कुह लोंगो के अनुसार स्तूप के देखने के लिए आने वाले विदेशी लोग भी बुद्व के भक्त हो जाते हैं और उन्हें पूजने लगतें हैं। बौद्व स्तूप में कई प्रकार के त्यौहार भी मनाये जाते है।

साँची स्तूप की खोज और संरक्षण –

ईशवी चौदहवीं शती से साँची का स्थान उजाड़ एवं अज्ञात ही रहा । सन् 1818 में जनरल टेरल ने साँची के बौद्ध स्मारकों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया । उन खंडहरों में उन्हे स्तूप 1,2 और 3 सम्पूर्ण मिले। इस उपलब्धि ने जनता में जो अपार कौतूहल पैदा किया, उसके कारण स्मारकों को अपरिपक्व पुरातत्वज्ञों और खजाना खोजने वालों के हाथों शोचनीन हानि पहुची । सन 1822 में भोपाल के असिस्टेंट पोलिटिकल एजेन्ट कैप्टन जॉन्सन ने स्तूप 1 को एक तरफ चोटी से नीचे तक खुलवा दिया जिससे स्तूप में बड़ी दरार पड़ गई । फल यह हुआ कि पश्चिमी तोरण द्वार और इर्द गिर्द की भूवेदिका का कुछ भाग गिर पड़ा। स्तूप 2 का भी कुछ भाग नष्ट कर दिया गया। सन् 1851 में एलेक्जेण्डर कनिघंम और उनके साथी कैप्टेन ए0सी0 मेसी ने स्तूप 2 और 3 को खोदा। इनमें उन्हे धातू मंजूषाएं मिली । इन खुदाइयों से तथा गांव के लोगों की लूट खसोट और जंगल की बहुतायत के कारण स्तूपों को अकथनीय हानि पहुची । अशोक के स्तम्भ एक स्थानीय जमीदार ने तुडवा दिया और उस टुकड़े को गन्ने का रस निकालने के लिए कोंल्हू के रूप में प्रयोग किया । स्मारक संरक्षण की ओर सन् 1881 तक किसी ने ध्यान नही दिया। इसी वर्ष सन् 1881 में मेजर कोल ने इस काम को बड़ी सावधानी पूर्वक अपने हाथों में लिया और तीन वर्षो के अल्पकाल में ही उन्होने बड़ी कुशलता से स्मारकों के पास का जंगल साफ कराया। स्तूप 1 के अण्ड की दरार को भरवाया, गिरे हुए पश्चिमी और दक्षिणी तोरणों तथा भूवेदिका को यथास्थान पर फिर खड़ा कराया और स्तूप 3 के तोरण को भी प्रतिष्ठित किया परन्तु उन्होने शेष इमारतों की ओर कोई ध्यान नही दिया। और नीचे दबे इमारतों को खोद निकालने का भी कोई प्रयत्न नही किया। बाद में इस कार्य को भारतीय पुरातत्व के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने पूर्ण कराया। सन् 1912–1919 के बीच मार्शल ने स्मारको को वर्तमान दशा में उद्घाटित किया । उन्होने जो काम कराया, उसमें जंगल की व्यापक सफाई, उत्खनन और स्मारकों का संरक्षण सम्मिलित थे।

केन्द्र स्थल और पूर्वी क्षेत्र के बीच की पुश्ता दीवार का पुनर्निर्माण, मंदिर 17,31 और 32 में परिष्कार तथा छतों का जीर्णोद्वार और समस्त क्षेत्र में बरसाती पानी के निकास के लिए समुचित नाली प्रबंधन किया गया। पूर्वोक्त कार्यो से निपट कर मार्शल ने बौद्ध स्मारकों को रमणीक बनाने के लिए सारे क्षेत्र में हरी घास और छायादार पौधों, फूलों वाली झाड़ियों और लताओं का रोपण कराया । स्थानीय खुदाई तथा खोज के दौरान जो प्राचीन वस्तुएं यत्र–तत्र मिली, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उन्होनें एक स्थानीय संग्रहालय की स्थापना भी की।

सन् 1936 में श्री मुहम्मद हमीद कुरेशी ने पहाड़ी की ढलान पर स्थित स्तूप 1 और 2 के बीच वाले क्षेत्र में खुदाई कराकर एक संघाराम के अवशेषों का उद्घाटन किया । इसके बाद यहां और खनन कार्य नही हुआ, फिर भी स्मारकों का संरक्षण निरन्तर होता चला आ रहा है। जिससे आगे की पीढ़ियां इन्हें देखकर भारत के अतीत गौरव का अनुमान लगा सकें।

स्मारक –

अपनी स्थिति के अनुसार साँची के स्मारक दो भागों में विभक्त किए जा सकते है– पहला वे जो पहाड़ी की चोटी पर स्थित है और दूसरा वे जो इसकी पश्चिमी ढलान पर कहीं–कहीं बिखरे पड़े है।

पहाड़ी की चोटी का मैदान एक विषम चतुर्भुज आकार का है। यह लम्बाई में उत्तर से दक्षिण 384 मीटर और चौड़ाई में पूर्व से पश्चिम 201 मीटर के लगभग है।इसके चारो ओर पत्थर की दीवार है जो 11–12 ईश्वी सदी के आसपास बनाई गई थी। दीवार से घिरे मैदान में तीन सुस्पष्ट क्षेत्र है जैसे– केन्द्र स्थल, पूर्वी क्षेत्र और दक्षिणी क्षेत्र । साँची के अधिकांश स्मारक तीन क्षेत्रों में फैले हुए है। मार्शल इन स्मारकों को 1 से 50 तक अंकों से निर्दिष्ट किया है। ऐसा करने में उन्होनें जनरल कनिघंम का अनुसरण करके उन्ही की गणना को अपनाया है। पहाड़ी के मूल से लेकर ऊपरी पठार के उत्तर–पश्चिम कोने तक फैले हुए सीड़ीनुमा मार्ग को शुरू में मेजर कोल ने बनवाया था। बाद में मार्शल ने इसको व्यवस्थित रूप से सुधारा । इसके बाद पहाड़ी के मूल से लेकर स्मारकों के प्रारम्भ तक सड़क मार्ग का निर्माण कराया गया है।

साँची के आस–पास के स्तूप समूह –

साँची से लगभग 9.5 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम बेतवा और वैशाली नदियों के बीच एक पहाड़ी पर सोनारी स्तूप, लगभग 10 किलोमीटर पश्चिम वैशाली नदी के बाएं किनारे पर सतधारा स्तूप, लगभग 11 किलामीटर दक्षिण–पूर्व में पिपालिया भोजपुर का स्तूप तथा (से लगभग 6.4 किलोमीटर दक्षिण आंधेर का स्तूप स्थिति है। आजकल साँची के स्तूप को छोड़कर अन्य स्तूप समूहों के दर्शन दुर्लभ हो गए है। ये स्तूप समूह जंगलों से फिर ढक गए हैं। अतः उन तक पहुचना आसान नही रह गया है।

सोनारी का स्तूप–

सोनारी का प्रचीन नाम सुवर्नारि, स्वर्णचक्र या धर्मचक्र था, जिसे बुद्ध ने लोक कल्याण लिए प्रवर्तित किया था। ये स्तूप सोनारी गांव से लगभग 1.2 किलोमीटर दक्षिण में एक पहाड़ी पर स्थित है। (इन स्तूपों का सम्पूर्ण वर्णन कनिघंम के ग्रंथ भिल्सा टोप्स पृ0 199 से 226 तक मिलता है) यहां का महान स्तूप सोपानवाला है। इसका व्यास 48 फुट है। इस पर उदयगिरि के सफेद पत्थर की हर्मिका थी इसकी भू वेदिका लगभग समाप्त हो चुकी है। इसे दाताओं ने बनवाया था । स्तूप में एक बड़ी पटिया के नीचे अस्थि पात्रों का स्थान था। उसमें पाषाण की स्तूपाकार मंजूषा मिली । उसके भीतर एक कमल के आकार की डिबिया थी, जिसके अन्दर कलश के आकार की स्फटिक की एक खाली डिबिया मिली । दोहरे सोपान वाले दूसरे स्तूप से पाषाण का अलंकृत कलश मिला । इसका ढक्कन लाख से जुड़ा था। कलश के अन्दर पाँच मंजूषाएं मिली । प्रत्येक मंजूषा पर आचार्य का नाम उत्तीर्ण था और उनमें उनकी अस्थियों के टुकड़े थे। उन आचार्यो के नाम–गोती पुत्र, कोडिनी पुत्र, मज्झिम, कोतीपुत्र, काश्यपगोत्र, कोसिकी पुत्र, आलबगीर।

सतधारा का स्तूप–

वैशानी नदी के किनारे एक पहाड़ी पर प्राकृतिक सौंदर्य के बीच ये स्तूप स्थित है। यहां महास्तूप ईटों का बना है, इसपर बाहर से पाषाण लगे थे। इसकी हर्मिका के बीच में छत्रयष्टि थी। दूसरे स्तूप से पाषाण की दो मंजूषाएं मिली थी । किन्तू उनमे अस्थियां नही थी । एक के ढक्कन के भीतर भाग पर "सारिपुत्र" और दूसरे के ढक्कन पर "महामोगलानस" उत्तीर्ण था।

साँची स्तूप 3 से ऐसी ही मंजूषाएं मिली है। सातवे स्तूप से मिट्टी के पात्र उसके अन्दर मिट्टी का अन्य पात्र और उसके अन्दर दो छोटी मंजूषाएं प्राप्त हुई थी । सतधारा के ग्रामीण लोग स्तूपो को "बुद्ध बीठा" कहते थे।

पिपलिया (भोजपुर) का स्तूप–

यहां पहाड़ी के सबसे ऊँचे भाग पर कुछ स्तूप उत्तर–दक्षिण एक श्रेणी में खड़े है। दूसरे स्तूप से मिट्टी का पात्र मिला था। उसके नीचे मिट्टी का छोटा स्तूपाकार पात्र मिला, जिसके ढक्कन की सफेद चूने की पर्त पर स्याही से अस्पष्ट अक्षर लिखे थे। इसमें से हड्डियों के टुकड़े, सोने के चार गोल पत्र तथा स्फटिक की सफेद हरी गुरिया आदि प्राप्त हुई थी। चौथे स्तूप से मिट्टी के एक पात्र में ढक्कन समेत मिट्टी का कटोरा मिला । इस पर "मुनि" शब्द उत्तीर्ण था, जिसका अर्थ है शाक्यमुनि बुद्ध। कटोरे में स्फटिक की मंजूषा थी। दूसरे भाग के स्तूपों में सातवे स्तूप से मिट्टी के पात्र में मिट्टी के दो अन्य पात्र मिले। बड़े पात्र पर "पतितों" अर्थात किसी दण्डित भिक्षु की अस्थियां रही होगी । ऐसा अभिलेख और कही नही पाया गया। छोटी मंजूषाओ में से एक पर "उपहितकस" लिखा है। सम्भवतः यह स्तूप अशोक कालीन है। आठवे स्तूप के पास स्थित एक स्तूप से पाषाण का एक दोहरा कलश मिला, जिसमें मानव अस्थियां थी। दसवे स्तूप से मिट्टी के एक पात्र में अस्थि–खण्ड मिले ।

ग्यारहवें स्तूप से मिट्टी के गोल घड़े में भी ऐसे ही अस्थिखण्ड प्राप्त हुए थे। सत्रहवें स्तूप से मिट्टी के पात्रों में अस्थिखण्ड मिले ।

संदर्भ ग्रंथ :–

- शर्मा, रामशरण (2004) ''भारत का प्राचीन इतिहास'' Publisher – Orient Black Swan, ISBN-8125026517

- सिंघानिया, नितिन (2017), ''भारतीय कला एवं संस्कृति'' (द्वितीय संस्करण) Publisher – M.C. Graw Hill Education ISBN- 978-9387067714
- विद्यालंकार सत्यकेतु (2014), मौर्य साम्राज्य का इतिहास, प्रकाशक – श्री सस्वती सदन BSR - 124116
- गौतम, राकेश एवं भदौरिया, जितेन्द्र सिंह (2017) मध्यप्रदेश (एक परिचय) , सप्तम संस्करण, Publisher – M.C. Graw Hill Education, ISBN-978-9387432338
- चिंचखेड़कर, संजय (2017), ''मध्यप्रदेश सम्पूर्ण अध्ययन'' Publisher – Pearson Education, ISBN-978-9332517981
- सिंह उपेन्दर (2016), ''प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास'' (पाषाण काल से 12 वी शताब्दी तक) Publisher – Pearson Genre Academic and Professional, ISBN-9788131774748
- त्रिपाठी, डॉ. रमाशंकर (2016), ''प्राचीन भारत का इतिहास'' Publisher – Motilal Banarsidas, ISBN-8120801564
- जॉन, मार्शल (1918), A Guide to sanchi, P-38, CulCutta, Pub. – suptd-Govt. printing press.